लेक सिटी
www.jagranmp.com/epaper
d
22 नवंबर 2020

उगते सूर्य को महिलाओं ने दिया अर्घ्य, छठी मईया का आशीर्वाद पाकर तोड़ा 36 घंटे का निर्जला व्रत

छठ महापर्व का समापन, गाय के कच्चे दूध से दिया अर्घ्य, घाटों पर दिखा श्रद्धा-भक्ति का अटूट संगम

जागरण रिपोर्टर। भोजपुरी समाज के चार दिवसीय छठ महापर्व के अंतिम दिन शहर के घाटों पर अटूट श्रद्धा और भक्ति का संगम देखने को मिला। माथे से मांग तक भरा सिंदूर और सोलह श्रृंगार किए महिलाएं बड़े और छोटे तालाब की लहरों में सूर्योदय का इंतजार कर रही थीं। आकाश में लालिमा छाने लगी, जैसे ही सूर्योदय हुआ अर्घ्य देते हुए महिलाओं ने पुत्र व पति के आरोग्य, सुख समृद्धि की कामना की। शनिवार को शीतलदास की बागिया सहित अन्य घाटों पर छठ पर्व के उत्साह के तहत तालाबों के घाट पर गंगा घाट जैसी झलक दिखाई दे रही थी। शुक्रवार की शाम को सूर्यास्त पर अर्घ्य देने के बाद भोजपुरी समाज ने रात जागरण किया और शनिवार को सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य दिया।

घुटने तक पानी में खड़े होकर दिया अर्घ्य

छठी मइया का आशीर्वाद पाकर सुहागिनों ने 36 घंटे का निर्जला व्रत खोला। इसके साथ ही भोजपुरी समाज के छठ पूजा महोत्सव का समापन हो गया। सुहागिनों ने उगते हुए सूर्य को गाय के दूध से अर्घ्य दिया। व्रत का पारायण किया। घुटने तक पानी में खड़े होकर व्रतधारियों ने सूप, बांस की डलिया में मौसमी फल गन्ना सहित पूजन सामग्री और गाय के दूध से भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया और सुख समृद्धि की कामना की। इससे पहले छठ पूजा के दूसरे दिन उगते सूरज को अर्घ्य देने के लिए घाटों पर कोरोना काल के चलते जहां कुछ श्रद्धालु मास्क पहनकर पहुंचे। लेकिन अधिकांश बिना मास्क के ही नजर आए। इससे पूर्व शीतलदास की बागिया और छोटो तालाब के खटलापुरा, काली मंदिर घाट सहित अन्य स्थानों पर सूर्योदय से पहले ही श्रद्धालु जमा होने लगे थे। गाय के कच्चे दूध और बांस के सूप में ऋतु फल, पकवान रखकर भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया गया।

पूर्व सांसद व मंत्री ने वितरित किया दूध

भोजपुरी एकता मंच द्वारा शीतलदास की बगिया घाट पर छठ पूजा महापर्व समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि पूर्व सांसद व भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा एवं पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने गाय के कच्चे दूध का वितरण एवं दीपदान भी किया। साथ ही भगवान भास्कर का पूजा अर्चना की। छठ पूजा महापर्व के समापन के बाद कोरोना महामारी मुक्त भोपाल एवं भारत के लिए सूर्य भगवान से विशेष प्रार्थना की। छठ पूजा महापर्व के समापन के बाद सभी पदाधिकारियों ने नगर निगम कर्मचारियों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान चलाकर घाट की सफाई की एवं घाट पर समस्त पूजन सामग्री कुंड में विसर्जित की।

सर्द शाम में पेश किए गायिकी के पारंपरिक अंग

जनजातीय संग्रहालय में गमक के तहत व्याख्यान व गायन की प्रस्तुति

● जागरण रिपोर्टर ●

जनजातीय संग्रहालय में आयोजित बहुविध कलानुशासनों की गतिविधियों पर एकाग्र 'गमक' श्रृंखला के अंतर्गत शनिवार को उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा इंदौर की कल्पना एवं अनुजा झोंकरकर द्वारा स्वर सरिता विषय एकाग्र व्याख्यान एवं गायन की प्रस्तुति दी गई।

प्रस्तुति की शुरुआत कल्पना झोकरकर के व्याख्यान से हुई, जिसमें उन्होंने कहा कि संगीत में शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एवं सुगम संगीत यह तीनों विधाएं बहुत लोकप्रिय और प्रचलित हैं। नाद ब्रम्ह से संगीत श्रृष्टि का निर्माण हुआ है, सुरों का अपना महत्व होता है, सुर ही संगीत का प्राण है आत्मा है इसलिए सुरीला संगीत हमेशा लोकप्रिय होता है और सुना जाता है। कहते हैं कि हमारे संगीत की शुरुआत लोक संगीत से हुई है, लोग कहते हैं कि संगीत के चार सुरों से संगीत श्रृष्टि का निर्माण हुआ है। शास्त्रीय संगीत की विधाओं में पहले प्रबंध गायन गाया जाता है उसके बाद ध्रुपद, धमार, अष्टपदी, तराना और उसके बाद खयाल गायन की परम्परा शुरू हुई और अभी तक जारी है। ध्रुपद को भी आजकल बहुत महत्व दिया जा रहा है और यह प्राचीन कला पुनः जीवित हो उठी है। संगीत की अन्य विधाओं पर चर्चा करते हुए सुश्री झोकरकर ने गायन की शुरुआत राग पुरिया धनाश्री से विलंबित खयाल एक ताल में 'मेरो करतार' से की। इसके बाद द्रुत बंदिश एक ताल में 'देखी तेरी आन बान' की सुमधुर प्रस्तुति दी। इसके बाद ठुमरी 'आज मोरी कलाई मुरक गई', टप्पा- राग खमाज में 'लाल पेजानी बेल, चाल पहचानी कियां', तीन ताल में ताराना- 'दानी दिन तना ना', दादरा- क्या जादू डारा, दिवाना किए श्याम' और 'मन लागो यार मेरो फकीरी में' भजन से अपनी प्रस्तुति को विराम दिया। उनके साथ सहगायन में अनुजा झोकरकर, तबले पर रामेन्द्र सिंह सोलंकी, हारमोनियम पर उपकार गोडबोले ने संगत दी।

गमक में आज

गमक के तहत आज रविवार को शाम 6:30 बजे से उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा इंदौर की सुचित्रा हरमलकर द्वारा 'व्याख्यान एवं कथक नृत्य' की प्रस्तुति होगी।

गुलदाउदी प्रदर्शनी 5-6 दिसंबर को, एंट्री के लिए करना होगा ऑनलाइन आवेदन

स्नो बॉल, बड़े स्पाइडर, सोनार बांग्ला गुलदाउदी वैरायटी होगी खास, सर्दी को देखते हुए बड़े फूल आने का अनुमान

● जागरण रिपोर्टर ●

म.प्र. रोज सोसायटी और उद्यानिकी एवं प्रक्षेत्र वानिकी विभाग म.प्र. शासन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित होने वाली सातवीं गुलदाउदी प्रदर्शनी 5 व 6 दिसंबर को लिंक रोड नं.1 स्थित गुलाब उद्यान में आयोजित की जाएगी। प्रदर्शनी का आयोजन कोविड-19 की गाइडलाइन के तहत होगा। रोज सोसायटी के अध्यक्ष एसएस गद्रे ने बताया कि इस बार प्रदर्शनी पिछले वर्ष से कम फूलों की संख्या देखने को मिलेगी। इस बार मुख्य रूप से स्नो बॉल वैरायटी, बड़े स्पाइडर, रिफ्लेक्स वैरायटी और सोनार बांग्ला की वैरायटी देखने को मिलेगी। उन्होंने बताया कि जिस तरह की सर्दी अभी हो रही है यदि वैसी ही रही तो बड़े फूल ज्यादा देखने को मिलेंगे।

भोपाल के बाहर से एंट्री नहीं, दुकान भी नहीं लगेगी

श्री गद्रे ने बताया कि कोरोना के कारण इस वर्ष भोपाल के बाहर से किसी को भी भाग लेने की इजाजत नहीं होगी। इसी तरह से प्रदर्शनी में किसी भी तरह की कोई दुकान लगाने की इजाजत नहीं दी जाएगी। शनिवार 5 दिसंबर को शाम 4 बजे से 6:30 बजे तक ही प्रवेश दिया जाएगा तथा रविवार 6 दिसंबर को सुबह 11 बजे से शाम 6:30 बजे तक प्रदर्शनी में प्रवेश दिया जाएगा।

प्रदर्शनी में इन बातों का रखना होगा ध्यान

- प्रदर्शनी में बिना मास्क किसी को भी प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
- प्रदर्शनी देखने के दौरान मास्क निकालने की इजाजत नहीं होगी।
- प्रदर्शनी की जगह पर बैठना मना होगा।
- 30 मिनट की अवधि में हर हाल में बाहर निकलना होगा ताकि अगले दर्शकों को प्रवेश मिल सके।
- प्रदर्शनी स्थल पर प्रवेश से पहले शरीर का तापमान लिया जाएगा तथा हाथों को सैनिटाइज किया जाएगा।
- हाथ धोने की भी व्यवस्था की जाएगी।
- प्रदर्शनी में आने के लिए ऑनलाइन आवेदन करना होगा।
- इसकी अधिक जानकारी 1 दिसंबर को सार्वजानिक की जाएगी।

10 हजार आटे के दीपक प्रज्जवलित कर दिया स्किल इंडिया का संदेश

कलार समाज के लोगों ने धूमधाम से मनाई आराध्य देव श्री सहस्त्रबाहु भगवान की जयंती

● जागरण रिपोर्टर ●

कलार समाज के आराध्य देव श्री सहस्त्रबाहु भगवान की जयंती शनिवार को शहर में धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर बसंत कुंज अरेरा कॉलोनी स्थित श्री सहस्त्रबाहु भगवान मंदिर में कई धार्मिक अनुष्ठान व आयोजन हुए। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजाराम शिवहरे ने बताया कि इस क्रम में दोपहर 2 बजे से मंदिर परिसर में हवन पूजन का आयोजन किया गया। शाम 4 बजे से भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो मंदिर परिसर से प्रारंभ होकर शाहपुरा तालाब पर जाकर संपन्न हुई। शाहपुरा तालाब पर शाम छह बजे आटे से निर्मित 10 हजार दीपकों को प्रज्जवलित कर उनका विसर्जन किया गया। दीपक की आकृति में स्किल इंडिया एवं सावधानी में सुरक्षा लिखकर पानी में छोड़े गए। इस दौरान बड़ी संख्या में समाज जन उपस्थित रहे। शाम सात बजे से मंदिर परिसर में प्रसाद वितरण के साथ इस आयोजन का समापन हुआ।

फिल्म 'छोरी' की शूटिंग के लिए नुसरत भरूचा पहुंची भोपाल

मराठी फिल्म का रीमेक है छोरी, हॉरर अंदाज में नजर आएंगी भरूचा

● जागरण रिपोर्टर ●

फिल्म एक्ट्रेस नुसरत भरूचा शनिवार को चार्टर्ड प्लेन से भोपाल पहुंची। नुसरत भोपाल में हॉरर फिल्म छोरी की शूटिंग के लिए पहुंची हैं। सूत्रों की मानें तो नुसरत का शूटिंग से पहले कोरोना टेस्ट होगा। इसके बाद वे भोपाल और पिपरिया में होने वाली फिल्म की शूटिंग में भाग लेंगी। उनके साथ एक्ट्रेस मीता वशिष्ठ भी भोपाल पहुंची हैं। नुसरत 'छोरी' फिल्म में लीड रोल में नजर आएंगी। यह फिल्म अवॉर्ड विनिंग मराठी फिल्म 'लापाछपी' का रीमेक है। नुसरत ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट में लिखा, 'अपनी अगली फिल्म 'छोरी' को लेकर रोमांचित हूं। कुछ चौंकाने वाला और डरावना आपके सामने आने वाला है। फिल्म 'छोरी' की स्क्रिप्ट विशाल कपूर ने लिखी है, उन्होंने ही ओरिजिनल फिल्म लिखी थी। हिंदी रीमेक को विशाल फुरिया डायरेक्ट करेंगे और उन्होंने ही 'लापाछपी' को डायरेक्ट किया था।

ओडिसी नृत्य के साथ जीवनदायिनी नर्मदा की महिमा

विश्वरंग का दूसरा दिन, साहित्य, कला व शिक्षा से जुड़े सत्र हुए सम्पन्न

● जागरण रिपोर्टर ●

विश्वरंग के दूसरे दिन की शुरुआत डॉ. बिंदू जुनेजा के ओडिसी नृत्य के साथ हुई। हिंदी और भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में रचित साहित्य और कला को नई पहचान दिलाने के लिए आयोजित किए जाने वाले इस महोत्सव में उन्होंने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। नर्मदा परिक्रमा नाम की प्रस्तुति में मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी नदी मां नर्मदा की आराधना हुई। मां नर्मदा की महिमा का बखान करने वाले श्री नर्मदाष्टकम नृत्य की प्रस्तुति देकर बिंदू ने सभी का मन मोह लिया।

ट्रेनिंग न होने से टीचर्स को हो रही परेशानी

'कोविड के बाद की दुनिया' सत्र का संचालन विश्वरंग के सहनिदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने किया। इसमें एसएस मंथा (पूर्व अध्यक्ष एआईसीटीई), नवीन मित्तल (कमिश्नर कॉलेज एवं तकनीकी शिक्षा, तेलंगाना), अंतरप्रीत सिंह (डायरेक्टर, डिजिटल लर्निंग, आईएसबी) शामिल हुए। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्यमिता, कला और संस्कृति पर कोरोना का क्या प्रभाव रहा है और इससे हम कैसे बच सकते हैं, विषयों पर चर्चा हुई। डॉ. मंथा ने बताया कि क्लासरूम स्टडी बंद होने के बाद ऑनलाइन एजुकेशन का महत्व बढ़ा है पर शिक्षकों को ऑनलाइन एजुकेशन की ट्रेनिंग न होने के कारण लगातार परेशानी हो रही है और हमें इस विषय पर सबसे ज्यादा काम करने की जरूरत हैं। इसके बाद कविता सत्र में जाने-माने साहित्यकारों ने रविन्द्रनाथ टैगोर और अन्य प्रसिद्ध कवियों की कविताओं के अनुवाद का पाठ किया। सबसे पहले कुमार मुकुल ने टैगोर की अनुवादित कविता का पाठ किया। पहली कविता मेरे प्यार की खुशबू... ने सभी श्रोताओं का दिल जीत लिया।

प्रांतीय कार्यकर्ता बैठक हुई सम्पन्न

जागरण रिपोर्टर। स्वदेशी जागरण मंच महानगर भोपाल द्वारा राष्ट्र ऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी जन्मशताब्दी समापन समारोह के उपलक्ष्य में प्रांतीय कार्यकर्ता बैठक में कश्मीरी लाल अखिल भारतीय संघठक स्वदेशी जागरण मंच का विशेष बोधन और मार्गदर्शन सभी कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ। साथ में केशव दुबोलिया प्रांत संघठक की उपस्थिति में भोपाल महानगर कार्यकारिणी में नवीन कार्यकर्ताओं को पदभार दिया गया। बैठक में भोपाल और होशंगाबाद संभाग के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

गोपाष्टमी पर्व आज, पूजी जाएंगी गाय और बछड़े

गाय के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने मनाया जाता है पर्व, स्नान कराकर व सजाकर की जाएगी पूजा

● जागरण रिपोर्टर ●

गाय-बछड़ों की पूजा का पावन त्योहार गोपाष्टमी आज रविवार को शहर में धूमधाम से मनाई जाएगी। गोपाष्टमी पर्व यानि गायों की रक्षा, संवर्धन एवं उनकी सेवा के संकल्प का ऐसा महापर्व जिसमें सम्पूर्ण सृष्टि को पोषण प्रदान करने वाली गाय माता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु गाय-बछड़ों का पूजन किया जाता है। मां चामुंडा दरबार के पुजारी पं. रामजीवन दुबे गुरुजी ने बताया कि भगवान श्रीकृष्ण ने जिस दिन से गौचारण शुरू किया वह शुभ दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी का दिन था। इसी दिन से गोपाष्टमी पर्व का प्रारम्भ हुआ।

इस तरह शुरू हुई गोपाष्टमी

गोपाष्टमी के उत्सव से जुड़ी कई कहानियां हैं। हिंदू शास्त्रों के अनुसार, गायों को भगवान कृष्ण की सबसे प्रिय माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार, गोपाष्टमी वह विशिष्ट दिन था जब नंद महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण और भगवान बलराम को गायों को चराने के लिए पहली बार भेजा, जब वे दोनों पागांडा उम्र 6-10 साल की आयु में प्रवेश कर रहे थे और इस प्रकार इस विशेष दिन से, वे दोनों गायों को चराने के लिए जाते थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि भगवान इंद्र अपने अहंकार के कारण वृंदावन के सभी लोगों को अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने बृज के पूरे क्षेत्र में बाढ़ लाने का फैसला किया ताकि लोग उनके सामने झुक जाएं और इसलिए वहां सात दिन तक बारिश हुई। भगवान श्रीकृष्ण को एहसास हुआ कि क्षेत्र और लोग खतरे में हैं, अतः उन्हें बचाने के लिए उन्होंने सभी प्राणियों को आश्रय देने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठा लिया। आठवें दिन, भगवान इंद्र को उनकी गलती का एहसास हुआ और बारिश बंद हो गई। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी। भगवान इंद्र और भगवान श्रीकृष्ण पर सुरभी गाय ने दूध की वर्षा की और भगवान श्रीकृष्ण को गोविंदा घोषित किया जिसका मतलब है गायों का भगवान। यह आठवां दिन था जिसे अष्टमी कहा जाता है, वह विशेष दिन गोपाष्टमी के रूप में मनाया जाता है।द्व

गोपाष्टमी के अनुष्ठान और उत्सव

गोपाष्टमी पर भक्त सुबह जल्दी उठते हैं और गायों को साफ करते हैं और स्नान कराते हैं। यह हिंदू अनुष्ठान इस दिन बछड़े और गायों की एक साथ पूजा व प्रार्थना करने का दिन है। पानी, चावल, कपड़े, इत्र, गुड़, रंगोली, फूल, मिठाई और अगरबत्ती के साथ गायों की पूजा की जाती है। विभिन्न स्थानों पर, पुजारियों द्वारा गोपाष्टमी के लिए विशिष्ट पूजा भी की जाती है। गाय पूजा एवं गौ दान से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। परिवार में भोजन बनाते समय महिला पहली रोटी गौ ग्रास के रूप में निकालती है। गोपाष्टमी के दिन पूजा करने से परिवार में सुख-शांति, समृद्धि, वैभव लक्ष्मी का आगमन होता है।